आज़ादी का
अमृत महोत्सव

भारत की सांस्कृतिक एकता के राष्ट्रीय एवं साहित्यिक संदर्भ

संपादक
संतोष कुमारी

भारत की सांस्कृतिक एकता
के
राष्ट्रीय एवं साहित्यिक संदर्भ

संपादक

संतोष कुमारी

साहित्य संचय

ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन

हम करते हैं समय से संवाद

भारत की सांस्कृतिक एकता के राष्ट्रीय एवं साहित्यिक संदर्भ
BHARAT KI SASNKRITIK EKTA KE RASHTRIY EVAM SAHITYIK SANDARBH

By : *Santosh Kumari*

ISBN : 978-93-91602-70-3

प्रकाशक

साहित्य संचय

बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस

ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस

राम निकुंज, पुतलीसड़क
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2022
कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : ₹ 300/- (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ 7/- (अन्य देश)

मुद्रक : श्रीबालाजी ऑफसेट, ई-15, सेक्टर-ए 5/6ए ट्रोनिका सीटी, गाजियाबाद, उ.प्र.

12. भारतीय संस्कृति में राष्ट्रीयता 94

दमयंती मरांडी

13. अटल जी की काव्यधारा के विविध आयाम 103

डॉ. विजय महादेव गाडे

14. वैदिक संस्कृति में विद्यमान राष्ट्रीयता 115

डॉ. सुप्रिया संजू

15. मालती जोशी की कहानियों में राष्ट्रीय चेतना के सामाजिक-सांस्कृतिक आयाम 124

डायमंड साहू

16. भारतीय संस्कृति में राष्ट्रीयता और मूल्य बोध 132

डॉ. रामनारायण शर्मा

17. एक माला के मोती 147

डॉ. वडचकर एस. ए.

18. साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा के दूत : प्रवासी भारतीय महाकवि प्रोफेसर हरिशंकर आदेश जी की अन्तर्कथा में राष्ट्रीयता 154

बालेश्वर राम

19. भारतीय संस्कृति में राष्ट्रीयता 165

अनीता कुमारी

20. हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता की अनुगूँज 172

निर्मला शुक्ला

21. हिंदी की कविताओं में राष्ट्रीयता 177

डॉ. लावणे विजय भास्कर

22. हिंदी साहित्य में पर्यावरण और राष्ट्रीय चेतना 182

रूपा प्रभू बी

Lala Ramesh Warpudkar (ACS) College, Dist. Parbhani

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

एक माला के मोती

विशेष संदर्भः– (मैथिलीशरण गुप्त और सोहनलाल द्विवेदी)

डॉ. वडचकर एस. ए.
हिंदी विभाग
कै. रमेश वरपुडकर महा. सोनपेठ
जि. परभणी, महाराष्ट्र

पृथ्वी और आकाश के अन्तराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गम्भीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ है, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के नये भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नई किरणें और उद्दम दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का नया ठाट खडा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह और अथक परिश्रम के द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए। आज जिस परिवेश में हम जी रहे है, उसमें राष्ट्रीयता की परिकल्पना महत्वपूर्ण हो गई है। राष्ट्रीयता को लेकर कई तरह की बाते की जा रही है। राष्ट्रीयता एक ऐसा मनोभाव है, जिसका मुलध्येय मातृभूमि की स्वंत्रता और उसकी संस्कृति की रक्षा है। राष्ट्रीय कविताए राष्ट्र के भिन्न भिन्न वर्गों सर्म्पदायों और प्रान्तों में भावात्मक एकता के विचार पुष्ट करती है। राष्ट्रीय कविताएं जाति, समाज और प्रान्तियता की संकीर्ण भावना मिटाती है। जन सामान्य के हृदय में कर्तव्य की भावना जगाती है। यह एक अध्यात्मिक भावना है जो उनलोंगो में उत्पन्न होती है, जिनके देश, नस्ल, साहित्य, इतिहास, भाषा, धर्म राजनीतिक आकांक्षाएं तथा आर्थिक हित एक समान होते है। हम यहां आधुनिक हिंदी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना पर विचार करने से पहले 'राष्ट्र' शब्द की संकल्पना पर विचार करना उचित सअझते है। राष्ट्र यह कोई भौतिक वस्तु नहीं है और न ही सीमाओं में आबध्द भूमि और जन

dkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

समृद्ध है। राष्ट्र मनुष्य के कर्म और चिंतन की आंतरीक पृष्ठभूमि में जीवन का वह अमूल्य सिद्धांत है, जहाँ मनुष्य कर्म, आस्था और संस्कृति की द्विधारा में सभ्यताओं को जन्म देता है। अनादिकाल से मनुष्य के भाव जगत में माँ और मातृभूमि का सर्वोच्य स्थान रहा है। इसलिए हम भारतीय संस्कृति मे जननी जन्मभूमि को स्वर्ग से भी उत्कृष्ट मानते है। जहाँ पृथ्वी मानव का पालन पोषण करती है, वहां मानव पर भी अपनी भूमि की रक्षा का दायित्व होता है। इस दायित्व को जब एक जन समुदाय ग्रहण कर लेता है, तो उसे राष्ट्र के रुप में स्वीकारा जाता है। राष्ट्र शब्द 'सर्व धातुभ्यः ट्रन' उगादि प्रत्यय के योग से 'रासु शब्दे' अथवा' राज शोभते' धातु से बना है। संस्कृत का' राष्ट्रम' शब्द' राजट्रन' शब्दों के संयोग से बना है जिसका अर्थ है राज्य, देश, साम्राज्य आदि। आचार्य रामचंद वर्मा ने अपने कोश में राष्ट्र शब्द को स्पष्ट करते हुए लिखा है "किसी निश्चित और वे एक शासन में रहते हैं, उसे राष्ट्र कहां जाता है।" राष्ट्र मे ईय प्रत्यय लगने से राष्ट्रीय शब्द बनता है। राष्ट्रीय शब्द 'राष्ट्रे भव इति राष्ट्रीयता' से भी बना है। हिंदी भाषा मे राष्ट्रीय एकता का मूल आधार सांस्कृतिक एकता को माना जाता है। इसके लिए मनुष्य सांप्रदायिक रुप से सहिष्णु होना अति आवश्यक होता है। राष्ट्रीय एकता जिस देश मेहोती है, उसे कोई भी अन्य देश जीत नहीं सकता इसी के माध्यम से चारित्रिक बल का भी पता चलता है।

राष्ट्र की संकल्पना हमारे ललिए बहुत प्राचीन है जिसके अन्तर्गत भुमि, उसकी सुरक्षा और सम्पन्नता के लिए राजा और प्रजा की आवश्यक जिम्मेदारियों का विस्तृत विवेचन मिलता है। किन्तु 19वीं सदी के बाद राष्ट्र की संकल्पना एक नए अर्थ मे उभरकर आती है, जिसके अंतर्गत व्यक्ति की स्वत्रंता और उसकी सुरक्षा के लिए राष्ट्र की सार्वभौम सत्ता की आवश्यक्ता अनुभव की जाने लगी है। जिस तरह मनुष्य को उचित उद्देश प्राप्ति का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए, इन्ही विचारों के साथ नए ढंग से राष्ट्र की संकल्पना सामने आई। भारत में राष्ट्रीय चेतना का उद्भव 19वी सदी के नवजागरण से शुरु होता है। इस जागरण के पीछे पश्चिम के नए ज्ञान विज्ञान का संपर्क नहीं था, सामाजवादी शोषण के कारण देश की आत्मा और विद्रोह की आग थी। आरंभ मे यह चेतना सांस्कृतिक आन्दोंलन के केन्द्र में पनपी। गांधी और तिलक इसी नवयुग के प्रतीक है, जो स्वत्रंता संग्राम में अपनी राष्ट्रवादी जनोन्मुखी असांप्रदायिक भूमिका के बावजूद गीता और रामायण को नहीं छोड पाये। हमे आधुनिक हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना भारतेंदु युग में देखने के लिए मिलती है। भारतेंदु युगीन राष्ट्रीय चेतना को स्वीकार कर

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

गुप्त जी ने नया निखार पाया और वे पराधीन भारत में अंग्रेजी साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद के विरुद्ध जागरण का में भारतीय जनता को दे सके। गुप्तजी के लिए देश की स्वाधीनता राजनीतिक सीमा संबंधी वस्तु नही थी, बल्कि भारतीय स्वाधीनता सग्रांम की मुक्ति की चाह में राजनीतिक नैतिक अर्थ और आयाम थे।

मैथिलीशरण गुप्तजी के लिए भारतीय होने का अर्थ था समग्रता मे देश-प्रेम, देशभक्ती और मातृभूमि के प्रति पावन पूजा का भाव उनके लिए आज के 'लुम्यन' बुद्धिजीवी की तरह देश भक्ति, देशप्रेम के कोरे निरर्थक शब्द नहीं थे, जिन्हे आज का आधुनिक बुद्धिजीवी मुंहपर लाते ही घबराता है, उनकी यह सस्ती भावुकता या घटिया किस्म की गाली है। मैथिलीशरण जी के लिए देश-प्रेम एक घटना है। निरंतर सार्थक प्रसंग। उनकी कृतियॉ भारत भारती, जयद्रथ वध, पंचवटी, जयभारत, साकेत यशोधरा का चिंतन देशभक्ती परक रहा है। उनकी यह कृतियॉ देश के प्रति लगाव एक आदि अंनत स्मृति है, जिसमें हमारे पुरखों की आत्मा निवास करती है। जिसमे हमें निरंतर रामायण महाभारत से लेकर गीता बुद्ध, विवेकानंद, तिलक, गांधी का राग सुनाई देता है। या यु कहें हमे उसमे राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता का चिंरतन ङटना प्रवाह मिलता है। गुप्तजी की सृजन चितंन दृष्टि राष्ट्र के सेक्युलर संकीर्ण अवधारणा से भिन्न है। उनके वेद, उपनिषेद, रामायण, महाभारत के प्रितीक, मिथक! बिंब यह सब नये अर्थ देने सहायक होते है। जिनकी अर्थवत्ता, राम सीता, उर्मिला, कृष्ण राधा बुद्ध यशोधरा से सर्जनात्मक अर्थ पाती है। एक तरह यह देश प्रेम, व्यापक अर्थो मे संस्कृति परंपरा स्मृति जातीय चेतना, मुक्ति की चेतना से जुडी है। किंतु खेद की बात यह है की आज के अनेक आधुनिक धर्म निरपेक्षवादी, बुद्धिजीवी को गुप्त जी की भारतीयता आधुनिकता उनके सोच के कारण सांप्रदायिकता, हिंदुत्ववाद दिखाई देती है। उनका 'भारत भारती' सांस्कृतिक नवजागरण का ऐतिहासिक दस्तावेज है। 'भारत भारती' की इस परंपरा का विकास माखनलाल चतुर्वेदी, नवीन जी, दिनकर, सुभद्रा कुमारी चौहान, प्रसाद, निराला जैसे कवियों में हुआ। राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता एक विशेष देश-प्रेम के आइडियोंलॉजिकल आग्रह के भीतर से निकली कविता है। जिसका रंग रुप स्वर मैथिलीशरण गुप्त जी के साथ माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर आदि कवियों ने उस युग की आंतरीक लय को विषय वस्तु बनाकर निखारा है। पराधिनता के समय इस रचना की महता द्विगुनित हो जाती है। क्योंकि एक हीन जाति को इस रचना में उसका गौरवपूर्ण अतीत याद कराया गया है।वे भारत की प्राचीन महिमापर प्रकाश डालते हुए लिखते है–

Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani
Late Ramesh

"हाँ वृद्ध भारत वर्ष ही संसार की शिरमौर है।
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है?
भगवान की भवभूति का यह प्रथम भंडार है।
विधि ने किया नर सृष्टि का पहले यही विस्तार है।"

गुप्त जी ने पूर्वजों के इस आदर्श चरित्र के माध्यम से पराधिनता की पीड़ा से गर्हित भारतियों में अपने प्राचीन आदर्शों के प्रति एक सजग, सचेत, कौतुहल पैदा करना चाहा है। जिससे उनका आत्मलोचन प्रखर हो सके और वह अपना मार्ग नियत कर सके। प्राचीन आदर्श पूर्ण भारतीय संस्कृति के आख्यान के लिए वह जिन विचार बिंदुओं को उठाते है, उनमे हमारे पूर्वजों के चरित्र, आदर्श और उनका कार्य प्राचीन सामाजिक व्यवस्था में विद्या, शक्ति, सौहार्द, सुख और शांती का विकास, पराधीन भारत की सूखती हुई नदियों में रक्त का संचार करने में वे सक्षमरहे है। वे मनुष्य के अंतरंग चरित्र, दिनचर्या, ब्रम्हाबेला मे शय्या छोडना व्यायाम जैसी बहिरंग चीजों का भी बडी बारीकी से विश्लेषण करते है। मैथिलीशरण गुप्त जी ने भारत की सामूहिक चेतना का प्रतिनिधित्व करते हुए हिन्दूस्तान में रहने वाला व भारतमाता के चरणों में सर्वस्व समर्पित करने वाला अर्थ भरा है।

"हम है हिन्दू की संतान
जिए हमारा हिंदुस्तान।"

गुप्त जी ने धर्म के आधार पर अच्छे बुरे का निर्णय नही किया। उनकी दृष्टि में मानवता ही व्यक्ति के आकलन की सबसे बडी कसौटी मानते है।

"हिन्दू हो या मुसलमान हो नीच रहेगा फिर भी नीच
मनुष्यत्व सबसे ऊँचा है, मान्यमही मंडल के बीच।"

भारतीय नवयुवकों को अपने अधिकारों के प्रति सजग रहने के लिए प्रेरित करते है।–"अधिकार खोकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है। लोगों को प्रजातंत्र के वास्तविक अर्थ को बताते हुए उन्हे प्रजातंत्र प्राप्ति के लिए उत्साहित किया है।

"राजा प्रजा का पात्र है, वह एक प्रतिनिधि मात्र है।
यदि वह प्रजा पालक नहीं, तो त्याज्य है।
हम दुसरा राजा चुनें, जो सब तरह सबकी सुने।
कारण, प्रजा काही असल में राज्य है।"

मैथिली शरण गुप्तजी की राष्ट्रीय भावना में सामाजिक सरोकार भी सम्मिलित हैं। वे सभी सामाजिक रुढियों को दुर करके एक स्वस्थ समाज का निर्माण करना

Late Ramesh Warpudkar (ACS) Sonpeth Dist. Parbhani

चाहते है। उनका मानना है कि आपसी वैमनस्य को दूर करके ही राष्ट्रीय एकता के लक्ष्य को पाया जा सकता है। सामाजिक कुरितियों को दूर करने और पारस्परिक सहयोग बनाए रखने के लिए समाज के लोंगो को प्रेरित करते हुए मैथिलीशरण गुप्तजी लिखते है–

"जग को दिखा दो यह कि अब भी हम सजीव सशक्त हैं
रखते अभी तक नाडियों में पूर्वजों का रक्त हैं।"

सहनलाल द्विवेदीजीने अपनी काव्य रचना का शुभारंभ स्वातंत्रय आंदोलन के उस दौर में किया था जब गांधी जी राष्ट्रनायक के रुप मे विदेशी सत्ता को हटाने के लिए देशव्यापी आंदोलन का नेत्तृत्व कर रहे थे। उस समय द्वावेदी युगधर्म को पहचानने वाले सशक्त और जीवंत कवि के रुप मे अपनी कलम विदेशी शासक कठोर दमन चक्र के नीचे भारतीय जनता जो पिस रही थी। शासन के विरुद्ध एक भी शब्द कहना फॉसी की सजा के लिए पर्याप्त होता था। आत्मभिव्यक्ति को कोई जगह न ही थी। तब सोहनलाल साहस और निर्भीकता के साथ भारत दुर्दशा का चित्रण कर विदेशी दासता के प्रतिरोध मे चेतना और जागृति के लिए उदबोधन के गीत गाकर नर नारियों को आहवान करते रहे। साथ ही देशवासियों को परतंत्रता से मुक्त होने के लिए देश के सभी क्षेत्रों, वर्गो और धर्मवलंबियों को आवाहन करते हुए जागरण का महाशंख फूंकते है–

"कुरुक्षेत्र में गूंज रहा है, भैरव शंख निनाद
जागो, जागो आज पांडवों के रण के उन्माद
मेरे हिंन्दुस्तान! जागो हुआ विहान।"

द्विवेदी जी ने अपने काव्य में नवयुवकों को स्फूर्ति और उर्जा भरने का काम किया है। जो विदेशी सत्ता को उखाड फेंकने के लिए आवश्यक था। भारत माता की मुक्ति और उसके लिए लोकजागरण और लोक क्रांति को जन्म देने का काम करते रहे है। साथ ही महात्मा गांधी को राष्ट्र मुक्ति का सुत्रधार मानकर उनमे बोधिसत्व का पुनदर्शन भरने का काम करते हुए कहते है–

"धन्य धरा यह आज कि जिसमे
तुमने जन्म लिया है।
धन्य जाति यह आज कि
जिसको तुमने मुक्त किया है
तुम्हे देखकर किया विश्व ने
बोधि सत्व का दर्शन।"

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

पं. सोहनलाल द्विवेदी ने कहां था "साहित्यकार की स्याही शहीद के लहु से भी अधिक पवित्र होती है। साहित्यकार को जीते जी अपनी हड्डीयों और रक्त का दान देना पडता है।" द्विवेदी को अपनी मातृभूमि से गहरा लगाव था, वे जननी और जन्म भूमि को स्वर्ग से भी महान मानते है। साथ ही चेतन मे राष्ट्रीय तिरंगे को फहराते हुए उसकी आन बान और शान का अनुभव करते है। वास्तविक तौर पर राष्ट्रध्वज हमारी बलिदान की प्रेरणा ही नहीं जगता, वह स्वतंत्रता के लिए बलिदान होने वाले शहिदों की स्मृति भी जगाता है। राष्ट्र सेवी होने के नाते हमे अपने कर्तव्यों का भी स्मरण करता है। उनके प्रणय गीत की ये पंक्तिया।–

"हम बढ़े उधर कि, जिधर राष्ट्र की पुकार हो,
हम बढ़े उधर कि, जिधर राष्ट्र का सुधार हो।
हम बढ़े उधर कि जिधर राष्ट्र पर विचार हो,
हम बढ़े उधर कि जिधर राष्ट्र पर प्रहार हो।

कोटि-कोटि शीश उठें बन अभेदय त्राण हो। राष्ट्र-ध्वज राष्ट्र का अमर विजय निशान हो।"

साथ ही सोहनलाल द्विवेदी ने सामाजिक अन्याय और आर्थिक विषमता को भी राष्ट्र उत्थान के मार्ग की समस्या मानते हुए इनके निराकारण पर अपनी कलम उठाई है। कृषक और मजदुर ही भारतीय अर्थ व्यवस्था के मुख्य स्तंभ है किन्तु उनकी स्थिति दयनीय ही है। ये गगणचुंबी, भवन जिन श्रमिकों और किसानों की मेहनत पर खडे है, वे निर्धन और असहाय है। अपने अंतिम दिनों में उन्होने समाज की इस विषम व्यवस्था से खिन्न होकर कहां था–

"जन-जन को देश के न अब तक
नन्हा एक निवारारे
झोंपड़ियाँ रो रही आज भी
हंसते हैं निवास रे
यह कैसा समाज जिसमें हैं
दीनों का उपहास रें
जो मेहनत करते पाते भर पेट न मुंह का ग्रास रे।
ओ भारत के भाग्य विधाता
बदलो यह इतिहास रे।"

द्विवेदी जी धार्मिक संकीर्णता और सांप्रदायिक भेदभाव से कोसों दूर थे। हिंदु-मुस्लीम विवाद को वे राष्ट्रीय एकता में बाधक मनते थे। वे मानव मात्र मे

एकता और सौहार्द के पक्षधर थे। इसलिए उन्होने बड़े ओजस्वी स्वर में, जाति संप्रदाय और धर्म के भेदभाव को तोड देने का आवाहन किया है–

"तोड़ दो मन में बसी श्रृखंलाएं
तोड़ दो मन में बसी सब संकीर्णताएं
बिंदु बनकर मैं तुम्हे ढलने न दुंगा
सिंधु बन तुमको उठाने आ रहा हूँ।"

सारतः राष्ट्र-भक्त कवि केवल अतीत के वैभव और इतिहास की सीख तथा वर्तमान के यर्थाथ में ही जीना नहीं चाहता, वह राष्ट्र के उज्जवल भविष्य के लिए ऐसे युवक चाहता है, जो सेवावृती हो और भारत माँ के चरणों पर शीश चढ़ाने के लिए उद्यत हो।

संदर्भ सूची

1. साहित्य अमृत 2012
2. भाषा अक्तुबर 2010
3. भारत भारती
4. साकेत
5. जयभारत
6. समृध्द काव्य संपा डॉ. सुजित सिंह परिहार

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

..., बी.लिब. एण्ड इन्फ साईन्स

... : विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आलेख प्रकाशित। राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों, कार्यशालाओं में भागीदारी एवं पत्र वाचन। सदस्य- 'राजस्थान पुस्तकालय सेवा परिषद्' एवं 'अखिल भारतीय साहित्य परिषद्'।

सम्मान/पुरस्कार : विद्यालय विकास में दिए गये आर्थिक एवं रचनात्मक सहयोग के लिए जिला शिक्षा अधिकारी (मा.) एवं प्रधानाचार्य रा.बा.उ.मा.वि. सादुलशहर, श्रीगंगानगर द्वार सम्मानित - जनवरी 2017

: पुस्तकालयाध्यक्ष दिवस (रंगनाथन जयन्ती) पर उत्कृष्ट पुस्तकालयी सेवा के लिए राजकीय सार्वजनिक जिला पुस्तकालय एवं लायन्स क्लब (विश्वास) श्रीगंगानगर द्वारा सम्मानित - 12 अगस्त 2017

: जिल प्रशासन द्वारा उल्लेखनीय कार्यों के लिए सम्मानित -15 दिसम्बर 2017

: उपखण्ड अधिकारी एवं उपखण्ड मजिस्ट्रेट सादुलशहर जिला श्रीगंगानगर द्वारा उत्तम शैक्षणिक कार्य के लिए सम्मानित -26 जनवरी 2018

: उपनिदेशक योजना, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर द्वारा उत्कृष्ट कार्य शैली, समय पाबन्दी एवं अनुशासनप्रियता एवं कर्तव्यनिष्ठा के लिए प्रशंसा पत्र-11 अगस्त 2018

: अवार्ड फॉर बेस्ट लाइब्रेरीयन -2020 पत्रकारिता के पुरोधा पुरुष की स्वर्ण जयंती पर स्वर्गीय डॉ. तेजनारायण शर्मा स्मृति पुरस्कार

: साहित्य संचय शोध संवाद फाउंडेशन द्वारा 'साहित्य संचय शोध सम्मान' प्राप्त 31 अक्टूबर 2021

पुस्तकें : आलेख मंजरी • समकालीन साहित्य में मानवीय संवेदना।

सम्प्रति : से.नि. वरिष्ठ पुस्तकालयाध्यक्ष, माध्यमिक शिक्षा विभाग, राजस्थान।

सम्पर्क : वार्ड नं. 11, ताराचन्द वाटिका के नजदीक पुरानी आबादी, श्रीगंगानगर, राजस्थान-335001

: फोन नं. 0154-2450780 मोबाईल - 9928323578

ई-मेल : santosh.kumari992830@gmail.com

साहित्य संचय

ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन

हम करते हैं समय से संवाद

www.sahityasanchay.com

e-mail : sahityasanchay@gmail.com

Mob. : 9871418244, 9136175560

₹ 300

ISBN : 978-93-91602-70-3

9 789391 602703